eISSN:2581-4885
DEV SANSKRITI
VISHWAVIDYALAYA
PUBLICATION

PERSPECTIVE ARTICLE

मानव जीवन के कल्याण हेतु यज्ञ – वैदिक वांग्मय के सन्दर्भ में

तनुशी पाठक [1], गायत्री किशोर [2]

[1] परास्नातक विद्यार्थी, संस्कृत एवं वेदाध्यन विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, भारत
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत एवं वेदाध्यन विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, भारत

सारांश: भारतीय परंपराओं के प्रचलन में तत्वदर्शी ऋषियों ने यज्ञ को भारतीय धर्म का पिता कहा है जिसमें मनुष्य जीवन का समग्र दर्शन समाहित है। मानव जीवन में यज्ञ की अनिवार्यता वैदिक वांग्मय का निर्देश है। मनुष्य जीवन के विविध आयामों में यज्ञ लाभ को वैदिक वांग्मय के सन्दर्भ में समझना प्रस्तुत अध्ययन का मूल उद्देश्य है। यज्ञ जीवन ही कल्याण कारक है। यह सृष्टि यज्ञ के सिद्धांतो पर चलती है। सृष्टि की उन्नति ही मनुष्य जीवन की उन्नति है। यज्ञमय जीवन जीने वाले से सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन होता रहता है और इससे देव शक्तियाँ संतुष्ट रहती हैं और उसकी सकल कामनाएं पूर्ण होती हैं अर्थात् वह आप्तकाम होता है। जिससे मनुष्य का सांसारिक जीवन मंगलमय बनता है। यज्ञमय जीवन से मनुष्य जीवन त्रिविध ताप आध्यात्मिक, आधिदैविक (व्यक्तित्व एवं प्रतिभा) एवं आधिभौतिक (सांसारिक समृद्धि) से मुक्ति अर्थात् लाभ प्राप्त करता है, जिससे मनुष्य जीवन सफल और कल्याणकारी बनता है। जब तक घर–घर में यज्ञ की प्रतिष्ठा थी, तब तक भारत भूमि स्वर्ग–सम्पदाओं की स्वामिनी थी। आज यज्ञ एवं यज्ञमय जीवन को त्यागने से ही मनुष्य जीवन की दुर्गति हो रही है।

कूट शब्द: मानव जीवन, यज्ञ, कल्याण, वैदिक वांग्मय

*CORRESPONDENCE
Address Tanushri Pathak Postgraduate, Department of Sanskrit and Vedic studies, Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Haridwar, India. Phone - +91 9569489538
Email ptanushee@gmail.com

PUBLISHED BY
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya Gayatrikunj-Shantikunj Haridwar, India

OPEN ACCESS
Copyright (c) 2022 Tanushri Pathak and Gayatri Kishor
Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

प्रस्तावना

भारतीय परंपराओं के प्रचलन में तत्वदर्शी ऋषियो ने यज्ञ को भारतीय धर्म का पिता कहा गया है जिसमे मनुष्य जीवन का भी समग्र दर्शन समाहित है। यज्ञ की जीवन में अनिवार्यता को राजर्षि जनक और महर्षि याज्ञवल्क्य के संवाद से समझा जा सकता है। यह संवाद यज्ञ के लिए पर्याप्त साधन न मिल सकने के सन्दर्भ में हुआ है। महर्षि याज्ञवल्क्य ने यज्ञ को परिभाषित करते हुए यज्ञ को केवल साधनों पर अर्थात् द्रव्यमय यज्ञ तक अवलम्बित न कहकर यज्ञमय जीवन की और इंगित किया है। राजर्षि जनक ने यज्ञ–अग्निहोत्र के साधन न मिलने की कठि–नाई बताते रहे है और याज्ञवल्क्य उसके लिए आपत्ति कालीन सुझाव बताते हुए यज्ञ करने की अनिवार्यता पर ही जोर देते है [1]।

यज्ञ शब्द का सामान्य संस्कृत अर्थ दान, संगठन और देव पूजन है [2]। इसका भावार्थ है – समाज कल्याण, दिव्य प्र–योजनों के लिए संगठित होना, और व्यक्तित्व निर्माण। यज्ञमय आचरण के द्वारा व्यक्तित्व की गहराइयों में असर पड़ता है जि–ससे व्यक्ति एक श्रेष्ट मानव बन पाता है। और उसमे देवताओ के दिव्य गुण प्रदर्शित होने लगते है।

यज्ञों की इस महान महत्ता को देखकर ही अनेक प्र–कार के यज्ञों का प्रचलन भारत देश में हुआ था। उनसे तरह के प्रयोजन सिद्ध होते थें। जैसे की "बलिवैश्व यज्ञ" पारिवा–रिक जीवन, आस्तिकता, आध्यात्मिकता और पवित्रता बनाये रखने के लिए, "बाजपेय यज्ञ" जनमानस की प्रसुप्त आत्मिक, बौद्धिक तथा नैतिक चेतना को जाग्रत करने के लिए, "राज–सूय" यज्ञ शासन तन्त्र की समस्याओं को सुलझाने के लिए हुआ करते थे।

मानव जीवन में यज्ञ की अनिवार्यता वैदिक वांग्मय का नि–र्देश है। मनुष्य जीवन के विविध आयाम में यज्ञ लाभ को वैदिक वांग्मय के सन्दर्भ में समझना प्रस्तुत अध्ययन का मूल उद्देश्य है।

यज्ञ द्वारा कल्याण

यज्ञ जीवन ही कल्याण कारक है। यह सृष्टि यज्ञ के सिद्धांतो पर चलती है। मनुष्य जीवन एक सृष्टि है और सृष्टि की उन्नति ही मनुष्य जीवन की उन्नति है। मनुष्य का वास्तविक लाभ इस संसार में देव शक्तियों अर्थात सत्प्रवृत्ति के संवर्धन में ही है क्योंकि इसी से हमारी सम्पूर्ण प्रगति एवं शान्ति स्थायी होती है। सत्प्रवृत्ति संवर्धन के भाव से दी हुई आहुतिया ही कल्याण का द्वार है। और इसी से ही हमें समृद्धि–सामर्थ्य प्राप्त होता है।

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोस्त्विष्टकामधुक्।।
देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।।
इष्टान्भोगाह्निवो देवा दास्यन्ते यज्ञ भाविता।
– गीता 3/10/11[3]

ब्रह्माजी ने मनुष्यों के साथ ही यज्ञ को भी पैदा किया और उनसे कहा कि इस यज्ञ द्वारा तुम्हारी उन्नति होगी, यह यज्ञ तुम्हारी इच्छित कामनाओं आवश्यकताओं को पूर्ण करेगा। तुम लोग यज्ञ द्वारा देवताओं को पुष्ट करो, वे देवता तुम्हारी उन्नति करेंगे। इस प्रकार दोनों अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए परम कल्याण को प्राप्त होंगे। यज्ञ द्वारा पुष्ट किए हुए देवता अनायास ही तुम्हारी सुख शान्ति की वस्तुए प्रदान करेंगे।

भद्रोनो अग्नि राहुतः।
–यजुर्वेद 15/38 [4]

यज्ञ में दी हुई आहुतियाँ कल्याणकारक होती हैं।

शिवो नामासि स्त्रिधितिस्ते पता नमस्तऽअस्तु मा मा हिसीः निवर्त्त याम्यायुषेऽन्नाध्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजा–स्त्वाय सुवीर्याय।
– यजुर्वेद 3/63 [4]

हे यज्ञ ! तू निश्चय से कल्याणकारी है। स्वयम्भू परमेश्वर तेरा पिता है। तुझे नमस्कार है तू हमारी रक्षा कर दीर्घ आयु, उत्तम अन्न, प्रजनन शक्ति, ऐश्वर्य, समृद्धि, श्रेष्ठ सन्तति एवं मंगलो–न्मुखी बल पराक्रम के लिए हम श्रद्धा–विश्वास पूर्वक तेरा सेवन करते है।

यज्ञमय जीवन ही मनुष्य का कल्याणमय जीवन है, इस लिए वेद यह आदेश देते है कि यज्ञ की महान उपासना को कभी मत त्यागो इसी से मनुष्य जीवन के वास्तविक शत्रु (आतंरिक दुर्बलता, चरित्र की हीनता, क्रोध, लोभ, अहंकार) से मुक्ति मिलेगी।

मा सुनोनेति सोमम्।
– ऋग्वेद 2/30/7 [5]

यज्ञानुष्ठान की महान् उपासना बन्द न करो।

अग्ने होत्रिणे प्रणुदे सपत्नाम् ।
–अथर्वेद 9/2/6 [6]

यज्ञ करने से शत्रु नष्ट हो जाते हैं।

यज्ञ की मनुष्य जीवन में अनिवार्यता को देखते हुए वेदो ने कहा है की इसको त्यागने से प्रगति के सारे मार्ग बाधित हो जाएंगे।

कस्मै त्व विमुञ्चति तस्मै त्वं विमुञ्चति।
– यजुर्वेद [4]

जो यज्ञ को त्यागता है, उसे परमात्मा त्याग देता है।

doi.org/10.36018/ijyr.v5i2.92

असुराश्च सुराश्चैव पुण्यहेतोर्मख क्रियाम्। प्रयतन्ते महात्मान–स्तस्तमद्यजः परायणम्। यज्ञैरेव महात्मानो ववुभुराधिका सुराः।
– महाभारत [8]
असुर और सुर सभी पुण्य के मूल हेतु यज्ञ के लिये प्रयत्न करते हैं सत्पुरुषों को सदा यज्ञ परायण होना चाहिए। यज्ञों से ही बहुत से सत्पुरुष देवता बने हैं।

नास्त्य यज्ञस्य लोको वै ना यज्ञो विन्दते शुभम्।
अयज्ञो न च पूतात्मा सश्यश्तिन्छिन्न पूर्णवत्॥ [1]
यज्ञ न करने वाला मनुष्य लौकिक और परलौकिक सुखों से वञ्चित रह जाता है । यज्ञ न करने वाले की आत्मा पवित्र नहीं होती और वह पेड़ से टूटे हुए पत्ते की तरह नष्ट हो जाता है।

यज्ञ द्वारा समृद्धि एवं सांसारिक सुखों की प्राप्ति

वैदिक वांग्मय कहता है कि मनुष्य जीवन में यज्ञ द्वारा समृद्धि एवं सांसारिक सुखों की भी प्राप्ति होती है। यज्ञ करने से मनुष्य की कामनाओं की पूर्ति होती है। कामनाएं अनंत है। यज्ञमय जीवन जीने वाले का जीवन निर्मल एवं शुद्ध होता जाता है। अतः उसकी कामनाये उसकी आवश्यकताऐ तक सीमित हो जाती है, और यज्ञमय जीवन जीने वाले की यह सम्पूर्ण आव–श्यकताएं प्रकृति पूर्ण कराती है। अतः यह कहा गया है कि यज्ञ सब कामनाएं पूर्ण करने वाला है।

यज्ञमय जीवन जीने वाले से सत्प्रवृत्तियाँ का संवर्धन होता रहता है और इससे देव शक्तियाँ संतुष्ट रहती है और इसका पूर्ण फल मनुष्य को मिलता है, उसकी सकल कामनाएं अर्थात् आप्तकाम होता है। और स्वतः ही सुख शांति समृद्धि की वृष्टि, धन, शारीरिक मानसिक पुष्टि, शक्ति, वैभव ऐश्वर्य, यश एवं बल की प्राप्ति होती है जिससे मनुष्य का सांसारिक जीवन मंगलमय बनता है।

सकामोयसिवम् कुर्यात् गायत्री होमदक्षते।
शतं काममवाप्नोति पदं यानत्यमश्नुते।। [1]
जो मनुष्य सकाम भावना से गायत्री यज्ञ करता है, उसकी इच्छित कामनायें पूरी होती हैं और अन्त समय में वह परमपद को प्राप्त करता है।

यज्ञोऽयं सर्व कामधुक्। [1]
यह यज्ञ सब कामनाएँ पूर्ण करने वाला है।

हव्यं कव्यं च विविध निष्पूर्तहुतमेव।।
–महाभारत, द्रोण पर्व 59/16 [8]
विभिन्न प्रकार की मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए हवन में आहुति डाली जाती है।

तथा कृतेषु यज्ञेषु देवानां तोषणं भवेत्।
तुष्टेषु सर्व देवेषु यज्वा यज्ञ फलं लभेत्।।
–महाभारत अनुशासन पर्व, अध्याय 145 [8]
यज्ञों से देवताओं को सन्तुष्टि होती है, और सर्व देवों के सन्तुष्ट होने पर यज्ञ करने वाले को पूर्णरूपसे फल प्राप्त होता है।

यज्ञेन यज्ञपुरुषो विष्णुः संप्रीणितो नृप।
अस्माभि भवतः कामाव्सर्वानेव प्रदास्यति।
– श्री विष्णु पुराण प्रथम अध्याय 3 [7]
हे नृप ! इस प्रकार यज्ञों के द्वारा यज्ञपुरुष भगवान विष्णु प्रसन्न होकर हम लोगों के साथ तुम्हारी भी सकल कामनायें पूर्ण करेंगे।

पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसनीथ यज्ञैः घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।
– यजुर्वेद 12/44 [4]
"हे ऐश्वर्य को प्राप्ति कराने वाले यज्ञाग्ने ! तुझे ये यज्ञकर्ता आदित्य यज्ञ, वसुयज्ञ एवं रुद्र यज्ञ के द्वारा बारम्बार प्रदीप्त करें। इन यज्ञों से तुम अपने तेजों की अभिवृद्ध करके यज्ञ कर्त्ताओं की कामना पूर्ण करो या पूर्ण करने में समर्थ होओ।"

अयमग्निः पुरीष्यो रयिमान् पुष्टिवर्द्धनः।
अग्ने पुरिष्याभि द्यूम्नमभि सहऽआयच्चस्व।।
– यजुर्वेद 3/40 [4]
यह यज्ञाग्नि वृष्टि कराने वाली, धन देने वाली तथा पुष्टि और शक्ति को बढ़ाने वाली है । पुरीष्य अग्नि ! तुम हमारा सब ओर से बल और यश का विस्तार करो।

अयमग्निर्गृहपतिर्गार्हपत्यः प्रजाया वसुवित्तमः। अग्ने गृहपतेऽ–भिद्युम्नभि सह आयच्छस्व।।
यजुर्वेद– 3/39 [4]
यह पोषण करने वाली गार्हपत्य अग्नि, प्रजा के लिये अतिशय ऐश्वर्य देने वाली है । हे गृहपति अग्ने ! आप हमारे लिये सब और ऐश्वर्य, यश एवं बल का विस्तार करें।

स्वास्थ्य

मनुष्य के जीवन आनंद का प्रथम चरण शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक स्वास्थ्य ही है इसके अभाव में जीवन का आनंद एवं उद्देश्य पूर्ण नहीं हो सकता। स्वास्थ्य हेतु यज्ञ से संपूर्ण उपचार संभव है जिसे वेदों में दर्शाया गया है। वेदोक्त रीति से हवन करने से अर्थात ऋषियों द्वारा वर्णित विधि, द्रव्यों एवं पात्रता से हवन करने से आरोग्य की प्राप्ति होती है। आयु, जीवनी शक्ति, प्रजनन शक्ति का लाभ मिलता है। आधुनिक काल में इस पद्धति पर हो रहे अनुसंधान कार्य में और गति लाने की प्रेरणा यह वैदिक निर्देश हमें देते है।

तां वेद विहितमिष्टमारोग्यार्थी प्रयोजयेत्। [1]
आरोग्य चाहने वाले को वेदोक्त रीति से हवन करना चाहिए।

उत्तिष्ठं ब्रह्मणस्यते देवान् यज्ञेन बोधप।
आयुः प्राण प्रजां पशून् कीर्ति यजमानं च वर्धय ॥ [1]
अर्थात् हे ब्रह्मणस्पते। अब आप उठ खड़े हो। आलस्य न करें, उठकर यज्ञ द्वारा विश्व की देवी शक्तियों को जाग्रत करें। इस जाग्रत दैवी शक्तियों से यजमान को सुखमय साधनों से अभि–पूरित करें तथा प्राणीमात्र की आयु, जीवनी शक्ति उचित प्रजा, अच्छे पशु, यश तथा कीर्ति को भी बढ़ा दें।

व्यक्तित्व एवं प्रतिभा निर्माण

मनुष्य जीवन का सही उद्देश्य पूर्ण हेतु सांसारिक समृद्धि भी आवश्यक है और महत्वपूर्ण आवश्यकता है सर्वांगपूर्ण पवि–त्र व्यक्तित्व एवं सद्प्रयोजन में प्रवृत्त प्रतिभा। इसी के बल पर मनुष्य अपने जीवन को सफल बना पाते है और सांसारिक समृद्धि भी व्यक्तित्व एवं प्रतिभा के बल पर अर्जित किये जाते है।

यज्ञ द्वारा मनुष्य को तेज, ओज, सद्बुद्धि, शुद्ध मन, वाणी की सामर्थ्य, प्राण आदि प्राप्त होते है जो व्यक्तित्व एवं प्रतिभा निर्माण में मदद करते है। यज्ञ से मनुष्य को दिव्या गुणों की प्राप्ति होती है जो उसे देवता बना देते है अर्थात् उसका व्यक्तित्व एवं प्रतिभा लोक कल्याण हेतु निष्कामता पूर्वक समर्पित होते है जिससे वह मनुष्य इस लोक का देवता के समान हो जाता है। उसके अंदर के दुर्गुण अर्थात असुर भाव यज्ञ से दूर होते है और वह प्रखर व्यक्तित्व बनाने में सफल हो जाता है और अपना जीवन कल्याणकारी बना लेता है।

अयज्ञियो हत वर्चाभवति।
– अथर्ववेद [6]
यज्ञ न करने वाले का तेज नष्ट हो जाता है।

प्रहोत्रे पर्वयं वचोग्नये भस्ता ब्रहत।
विषां ज्योतीं विभ्रते न विद्यते।। [1]
यज्ञ करने से सद्बुद्धि, तेज और भगवान् की प्राप्ति होती है।

गृहा मा विभीत वैपध्वमूर्जं विभ्रऽएमसि उर्ज विभ्रद्वः सुमन।
– यजुर्वेद 1/3/41 [4]
'हे गृहस्थी ! डरो मत, घबराओ मत, बल–वीयं को धारण करने वाले हम तुम्हारे पास आये हैं। ओज को धारण करते हुए, शुद्ध मन और बुद्धि वाले, हृदय में प्रसन्न होते हुए हम तुम्हें कल्याण के लिये प्राप्त होते हैं।

धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानायत्वा व्यनाय त्वा।
दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवोव, सविता हिरण्यपाणिः प्रति–घृभ्यणात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि।।
– यजुर्वेद 1/20 [4]
हे यज्ञ ! तुम देवों के धान्य (भोजन) हो, अतः इस हवि के द्वारा तुम उन्हें प्रसन्न करो, जिससे वे प्रसन्न होकर यज्ञकर्ता को सुख और कल्याण प्रदान करें हम तुम्हें प्राण, उदान, व्यान आदि प्राणों में, आयु में तथा जीवन की व्यापक उन्नति करने के लिये धारण करते हैं, आपके अनुग्रह से यह सब वस्तुयें हम प्राप्त करेंगे।

अस्कन्नमा देवेभ्य आज्यं, सभ्रियासमभ्रिणा विष्णो मा त्वाव–क्रमिषं वसुमतीमग्ने तेच्छायामुपस्थेषं विष्णो स्थानमसीतऽइन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वो ऽध्वर आस्थात्। [1]
आज मैं दिव्य गुणों के लिये, अविचलित आज्य को गति के साधक अग्नि के द्वारा अच्छे प्रकार धारण करता हूँ। हे यज्ञ मैं धन–धान्य से युक्त तुम्हारे आश्रय को प्राप्त हो जाऊँ।

देव सवितः प्रसुव यज्ञ प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूतेः केत नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्व–दतु।
– यजुर्वेद 1/11/7 [4]
हे सर्व तत्वों के उत्पादक यज्ञ ! हमें सुख एवं ऐश्वर्य को देने वाले श्रेष्ठतम कर्म यज्ञानुष्ठान में प्रवृत्त करो और यज्ञ के अनुष्ठान वालों को अपने दिव्य गुणों की उपलब्धि के लिये उत्प्रेरित करो, जिससे हम लोग दिव्य वाणी और दिव्य वाणी के अधिष्ठाता की पवित्रता से अपने ज्ञान और वाणी के साधनों को पवित्र करें, जिससे हमारा ज्ञान अमृत से और हमारी वाणी आस्वाद से परिपूर्ण हो जाय।

ये रूपाणि प्रति मुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।
परापुरो निपुरो ये भरन्त्याग्निष्टां लोकात् प्रणुदात्य स्मात्।।
– यजुर्वेद 2/30 [4]
जो असुर प्राण इस पृथ्वी पर असुर रूप से विचरण करते रहते हैं वे यज्ञ की अग्नि द्वारा शरीर में से निकाल बाहर किये जाते हैं।

आध्यात्मिक लाभ

मनुष्य के जीवन का उद्धेश्य परम तत्त्व परमात्मा की प्राप्ति का है। इस हेतु उसे जन्म जन्मान्तर से संचित पापो से अर्थात् दु–ष्कर्मो से कुसंस्कारो से छुटकारा पाना पड़ता है। यज्ञमय जीवन ही इस हेतु एक उपाय है। जिससे मनुष्य पापो से मुक्त होकर, दिव्य गुणों एवं ब्रम्हावर्चस की प्राप्ति करता है और परमात्मा का तेज प्राप्त करता है। यज्ञ मय कर्म की प्रदीप्त ज्वाला से असुर अज्ञान पाप से छुटकारा प्राप्त कर के ज्ञानमय परमात्मा की प्रति करता है मनुष्य जीवन के अध्यात्मिक लाभ हेतु यज्ञकर्म सत्प्रवत्ति संवर्धन अनिवार्य है।

सर्व सपापं तरतियो ऽत्वमेधं यजेतवै।
– पद्म पुराण [12]

doi.org/10.36018/ijyr.v5i2.92

सब पापों में रत व्यक्ति भी यज्ञ करने से पाप मुक्त हो जाता है।

यज्ञेन पापैः बहुभिर्विमुक्तः प्राप्नोति लोकान् परमस्य, वि-ष्णोः। [1]
यज्ञ से अनेक पापों से छुटकारा मिलता है परमात्मा के लोक की भी प्राप्ति होती है।

य एनं परिषीदन्ति समादधतिचक्षसे।
संप्रेद्धो अग्निजिव्हाभिरुदेतु हृदयादधि।
– अथर्ववेद 6/75/1 [6]
जो इस अग्नि के चारों ओर बैठकर हवन आदि करते हैं और दिव्य उद्देश्य से हवि चढ़ाते हैं उनके हृदय में परमात्मा का तेज प्रकाशित होता है।

निष्कामः कुरुते यस्तु स परब्रह्मं गच्छति।
– मत्स्यपुराण [11]
निष्काम भाव से हवन करने वाले को निश्चय ही परब्रह्म की प्राप्ति होती है।

इन्द्रस्य स्यूरसीद्रस्यधुवोऽसि ऐन्द्रमसि वैश्वदेवमसि।
– यजुर्वेद 1/5/30 [4]
हे यज्ञ ! तुम ऐश्वर्यवान् इन्द्र या परमेश्वर के लिए सुनिश्चित रूप से आकर्षण के साधन हो, क्योंकि तुम्हारे द्वारा आह्वान होने पर परमेश्वर से आये बिना रहा ही नहीं जाता। इन्द्र के इन्द्रत्व और विश्व देव के विश्वदेवत्व सभी तुम पर ही अवलम्बित हैं यानी तुम्हारे द्वारा ही इन दिव्य गुणों को अभिप्राप्ति सभी को होती है।

यः कामयेत् ब्रह्मवर्चसी स्यामिति तर्हि हस जुहुयात्॥
– शतपथ ब्राम्हण 2/3/2/13 [13]
जो व्यक्ति चाहे कि मैं ब्रह्मवर्चस् से सम्पन्न बन जाऊँ, तो उसे यज्ञ करना चाहिए। क्योंकि यज्ञ से ब्रह्मवर्चस् की प्राप्ति होती है।

तिशद्धाम विराजति वाक् तंगाय धीयते।
प्रति वस्तोरह द्युभि।। [1]
जो यज्ञ प्रतिदिन किया जाता है, वह अपनी प्रदीप्त ज्वालाओं से युक्त निरन्तर यज्ञकर्त्ता के अन्तर में विराजता रहता है, फिर ऐसी दशा में किसी अन्धकार, असुर अज्ञान को ठहराने को (यहाँ) अवकाश ही कैसे हो सकता है? सच्चे यज्ञकर्त्ता एक दिन सम्पूर्ण अन्धकार और अज्ञान से मुक्त होकर दिव्य परमात्मा के चरणों में पहुँच जाते हैं।

परलोक एवं धर्म सम्बंधी लाभ

भारतीय संस्कृति में पुनर्जन्म एक सत्य है एवं जीव का कल्याण लोक एवं परलोक सम्बन्धी जीवन से जोड़कर यज्ञमय जीवन शुभ कर्मो की और प्रेरित किया गया है। आध्यात्मिक जीवन को लोक–परलोक सम्बन्धी लाभ के रूप में दर्शाया जाता है। ब्रह्मवर्चस की प्राप्ति यज्ञमय जीवन सत्प्रवृत्ति संवर्धन हेतु जीवन उत्कर्ष करने से मिलता है जिसे यहाँ पर लोक – पर–लोक सम्बन्धी लाभ से दर्शाया गया है और यज्ञ करने हेतु प्रेरित किया गया है। क्योंकि मनुष्य जीवन में यज्ञ ही (यज्ञमय जीवन) ही श्रेष्ठत्तम कर्म है।

नौह वा एषा स्वर्ग्या यदग्नि होत्रम्।
– शतपथ ब्राम्हण 2/3/3/15 [13]
यह अग्नि निश्चय ही स्वर्ग सुख प्राप्त करने वाली विशेष नौका है।

अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्ग कामः। [1]
स्वर्ग की कामना करने वाले को अग्निहोत्र करना चाहिए।

अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथ्व्याऽअयम् अपां रेतांसिजि-न्वति।
– यजुर्वेद 1/312 [4]
यह महान् यज्ञाग्नि, पृथ्वी में व्याप्त होकर इसका पोषक और सञ्चालक बन जाता है, अन्तरिक्षलोक में यह पर्जन्य से एकी–भूत होकर वृष्टि (जल) का रूप धारण कर लेता है और यही एक यज्ञाग्नि द्युलोक में व्याप्त और सामञ्जस्यसित होकर सूर्य रूप को प्राप्त होता है। अतः यज्ञ के द्वारा मनुष्य प्रत्येक लोक की ऊँची स्थिति को प्राप्त कर लेता है।

आग्नेयोऽयं यज्ञः ज्योतिरग्निः पाप्मनो वग्धा सोऽस्य पाप्मानं दहति स इह ज्योतिरेव श्रिया यशसा भवति ज्योतिरमुत्र पुण्य लोक त्वैतन्नु तद्यस्मादाद्धीत।
– शतपथ ब्राम्हण 2/36 [13]
अग्नि का यज्ञ है। अग्नि ज्योति है। यह पापों को जलाती है। यह (यजमान के) पापों को जलाती है। यह ज्योति, शोभा और यश को प्रदान करने वाली है। यह ज्योति परलोक में भी पुण्य प्रदान करती है। इसीलिए अग्निहोत्र करना चाहिए।

देवा सन्तोषिता यज्ञोर्लोकान् सम्बर्धयन्त्युत।
उभयार्लोकयो देव भूतियज्ञ प्रदृश्यते।।
तस्माद्यदेज्ञावं याति पूर्वजः सहमोदते।
नास्ति यज्ञ समंदानं नास्ति यज्ञ समोत्रिधिः।
सर्व धर्म समुद्देव्यो देवि यज्ञ समाहिताः।
– महाभारत [8]
यज्ञों से सन्तुष्ट होकर देवता संसार का कल्याण करते हैं यज्ञ द्वारा लोक–परलोक का सुख प्राप्त हो सकता है। यज्ञ से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। यज्ञ के समान कोई दान नहीं, यज्ञ के समान कोई विधान नहीं, यज्ञ में ही सब धर्मों का उद्देश्य समाया हुआ है।

यज्ञो वै तमं कर्म, अयाज्ञियो हत वर्चः।
– गौतमीयमहातंत्रम् 5/7/12 [9]
यज्ञ ही संसार का सर्वश्रेष्ठ शुभ कार्य है, जो यज्ञ नहीं करते उनका तेज नष्ट हो जाता है।

नाग्निहोत्रोत्परो धर्म:।
– कूर्म पुराण [10]
अग्निहोत्र से बढ़कर और कोई धर्म नहीं।

उपसंहार

मनुष्य जीवन बहु आयामी है। जिसे यज्ञमय जीवन से कल्या–णकारी बनाया जा सकता है। वैदिक वांग्मय हमें तीन प्रकार के दुःखों से छूटनेका उपाय यज्ञ – यज्ञमय जीवन ही बताते है। मनुष्य जीवन तीन प्रकार के बंधनों व् तापों से ग्रसित है। आध्यात्मिक, दैविक (व्यक्तित्व एवं प्रतिभा) व् सांसारिक (समृद्धि) लाभ यज्ञ से संभव है, जिससे मनुष्य जीवन सफल एवं कल्याणकारी बनता है।

आध्यात्मिकं चाधिदैवमाधिभौतिकमेव च।
एतत् तापत्रयं प्रोक्तमात्मवद्भिर्नराधिप।।
यस्माद् वै त्रायते दुःखाद् यजमानं हुतोऽनलः तस्माद् तु वि–धिवत् प्रोक्तमग्निहोत्रमिति श्रुता।।
– महाभारत अश्वमेधिक पर्व अध्याय 92 [8]
हे राजन् ! आध्यात्मिक, आधि दैविक तथा आधिभौतिक–ये तीन ताप आत्मवेत्ताओं ने कहे हैं विधिपूर्वक हवन करने पर अग्नि यजमान का इन तीन दुःखों से रक्षा करता है इसलिए वेदों में इसे अग्निहोत्र कहा गया है।

अग्निहोत्र के अध्यात्मिक लाभ के अनुरूप व्यक्ति के विकृ–तियों का निवारण हो जाता है। यज्ञ वातावरण से अन्तः करण की गहराइ तक प्रभाव पड़ता है। जिससे उनके अन्तः करण में तेजी से सुधार होता चला जाता है। यज्ञ से मानसिक दोषों, दुर्गुणों का निष्कासन एवं सद्भावों का अभिवर्धन नितांत संभव है। काम, क्रोध, भय मोह, मद, मत्सर, ईर्षा, द्वेष, कायरता, कामुकता, आलस्य, आवेश, संशय अदि मानसिक रोग ओर मनुष्य के विकृतियों का निराकरण यज्ञ के द्वारा संभव है । यज्ञ के द्वारा मनुष्य के शरीर और मन की स्थिति देव तुल्य बन जाती है। वेदों और पुराणों के अनुसार अयज्ञकर्ता के लिए उसके स्वयं के स्वार्थ के कारण उसे शांति और सुख प्राप्त नहीं होता। इस तरह यज्ञ सुख शांति की आधार शिला है। अग्निहोत्र के भौतिक लाभ भी है। यज्ञ से वायु शुद्ध होती है और जिससे स्वास्थ्य वर्धन होता है।

यज्ञ की महान महत्ता को समझकर ही गायत्री यज्ञों की परम्परा भारतीय संस्कृति में थी जो हमें सतत शुभ कल्याण–कारी सत्कर्मो को करने के लिए प्रेरित कराती थी। उसे छोड़ देने से मनुष्य समुदाय की दुर्गति हुई उसे फिर से ठीक किया जाना चाहिए। अग्निहोत्र की परम्परा फिर से घर–घर चलनी चाहिए। जब घर–घर में यज्ञ की प्रतिष्ठा थी, तब यह भारत भूमि स्वर्ग–सम्पदाओं की स्वामिनी थी। आज यज्ञ को त्यागने से ही मनुष्य जीवन की दुर्गति हो रही है।

Compliance with ethical standards Not required.
Conflict of interest The authors declare that they have no conflict of interest.

References

[1] Brahmavarchas, editor. Hindu Dharm mein yagyon ka sthan tatha prayojan (Hindi). In: Yagya ka gyan-vigyan (Pt Shriram Sharma Achraya Vangmay No 25). Akhand Jyoti Sansthan, Mathura-281003; 1998.

[2] Acharya shrivardrajpranita. Laghusidhhantkoumudi, subodh sutra (sutra 864). Choukhambha Sanskrit bhawan, Varanasi. 2018;p-582. ISBN: 978-81-89986-89-6.

[3] Shrimadbhagwat Geeta. Geetapress Gorakhpur. 273005. Satarvah sanskaran. 2010.

[4] Sharma S., Yajurveda. Sanskriti Sansthan Barely. 1965.

[5] Acharya shriram sharma, Sharma B devee, editors. Rigved samhita. Revision. Yug nirman yojana vistar trust, Gayatri Tapobhumi, Mathura-281003; 2013.

[6] Sharma S, Sharma B. Atharvaved Sanhita-2014th ed. Yug nirman yojana vistar trust, Gayatri Tapobhumi, Mathura; 1961.

[7] Shri vishnupuran. Geetapress Gorakhpur. Chap-panva sanskran. 2019.

[8] Pandey, ramnarayandatt shashtri. Mahabharat. Geeta Press Gorakhpur. 2020.

[9] Malviya, Ramji. Goutamiyamahatantram. Sampur-nanand Sanskrit University. 1992.

[10] Kurma Puran. Motilal Banarsidass Publishers Delhi. edition 1st edition – 1951. Reprint 1998.

[11] Matasya Puran. Geeta PressGorakhpur. 2013

[12] Goyandka, Jayadayal. Padma puran. Geeta press Gorakhpur. 1994.

[13] Saraswati swami satyaprakash. Shatpath Bramhin. Vijay Kumar Govindram Hasanand. 2019